United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

डॉ .बलगा सुभा

गुरिनधापल्ली अशोक कुमार
हिंदी शोधार्थि, पिथापुर राजा राजकीय महाविद्यालय (स्व), काकीनाडा,
आदिकवि नन्नय्या विश्वविद्यालय ,राजमहेंद्रवरम, आंध्रप्रदेश

कीवर्ड्स
प्रेमचंद, मानवीय मूल्य, यथार्थवाद, हिंदी कहानी, सामाजिक संवेदना, आर्थिक संघर्ष।

परिचय

प्रेमचंद का साहित्य और सामाजिक सरोकार: मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य के उन बिरले रचनाकारों में से हैं, जिन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर उसे 'देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई' माना। उनका साहित्य भारतीय समाज के दलितों, किसानों, स्त्रियों और उपेक्षित वर्ग की आवाज़ है। प्रेमचंद का सामाजिक सरोकार इतना गहरा है कि वे समाज की कुरीतियों, आर्थिक विषमताओं और औपनिवेशिक दासता के विरुद्ध अपनी कहानियों के माध्यम से एक वैचारिक युद्ध लड़ते दिखाई देते हैं। उनके लिए साहित्य समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि समाज को बदलने वाला एक सक्रिय औज़ार भी है।
मानवीय मूल्यों की परिभाषा और प्रेमचंद का दृष्टिकोण: मानवीय मूल्य वे आदर्श और नैतिक सिद्धांत हैं जो किसी भी समाज की मानवता को जीवित रखते हैं—जैसे दया, ईमानदारी, त्याग, और सहानुभूति। प्रेमचंद के दृष्टिकोण में ये मूल्य स्थिर नहीं हैं; वे इन्हें सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। प्रेमचंद का मानना था कि जब तक मनुष्य की बुनियादी आवश्यकताएँ (जैसे भोजन और सम्मान) पूरी नहीं होतीं, तब तक नैतिक मूल्यों की रक्षा करना कठिन होता है। उनके साहित्य में मूल्यों का संघर्ष अक्सर 'आदमी' और 'व्यवस्था' के बीच का संघर्ष बन जाता है।
चयनित तीनों कहानियों का संक्षिप्त परिचय: प्रस्तुत शोध आलेख में मानवीय मूल्यों के इसी विकासक्रम को समझने के लिए प्रेमचंद की तीन कालजयी कहानियों का चयन किया गया है:

1. पूस की रात (1930): यह कहानी आर्थिक अभाव के बीच एक किसान (हल्कू) की विवशता और उसके मानवीय गरिमा के साथ होते समझौते को दर्शाती है।
2. ईदगाह (1933): यह कहानी बाल-मनोविज्ञान के माध्यम से त्याग, प्रेम और संवेदना के उच्चतम मानवीय मूल्यों को प्रतिपादित करती है।
3. कफ़न (1936): यह प्रेमचंद की अंतिम महान रचना है, जो मूल्यों के पूर्ण विघटन और निर्धनता के कारण पैदा हुई संवेदनहीनता का नग्न चित्रण करती है।

ये तीनों कहानियाँ मिलकर प्रेमचंद की वैचारिक यात्रा और समाज के प्रति उनके बदलते दृष्टिकोण को स्पष्ट करती हैं।

शोध के उद्देश्य

प्रेमचंद की कहानियों में मानवीय मूल्यों के बदलते स्वरूप का विश्लेषण करना। आर्थिक परिस्थितियों का मानवीय संवेदनाओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध कार्यविधि

द्वितीयक स्रोत : अध्ययन की प्रामाणिकता और गहराई के लिए विभिन्न द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है। इसमें प्रेमचंद के साहित्य पर केंद्रित आलोचनात्मक पुस्तकें और साहित्यकारों के निबंध शामिल हैं। प्रमुख आलोचकों जैसे डॉ. रामविलास शर्मा और डॉ. नामवर सिंह के सिद्धांतों को आधार बनाकर इन कहानियों का मूल्यांकन किया गया है।

विश्लेषणात्मक पद्धति : इस शोध में ऐतिहासिक-तुलनात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। 1930 से 1936 के कालखंड को ध्यान में रखते हुए, यह विश्लेषण किया गया है कि कैसे समय और आर्थिक स्थितियों के साथ प्रेमचंद के कथा-साहित्य में मूल्यों का ह्रास या उत्थान हुआ है। यह शोध केवल प्रेमचंद की इन तीन चयनित कहानियों तक सीमित है, जो उनके लेखन का प्रतिनिधित्व करती हैं। विश्लेषण का मुख्य केंद्र 'आर्थिक स्थिति' और 'नैतिकता' के अंतर्संबंधों को समझना है।

मुख्य तुलनात्मक विश्लेषण :

प्रेमचंद के कथा-साहित्य पर पिछले कई दशकों से व्यापक विमर्श होता रहा है। उनके साहित्य की समीक्षा मुख्य रूप से उनके 'यथार्थवाद' और 'सामाजिक प्रतिबद्धता' के इर्द-गिर्द घूमती है।

डॉ. रामविलास शर्मा ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक *'प्रेमचंद और उनका युग'* में यह रेखांकित किया है कि प्रेमचंद पहले ऐसे रचनाकार थे जिन्होंने साहित्य को सामंतों के दरबार से निकालकर आम जनता की झोपड़ियों तक पहुँचाया। उनके अनुसार, प्रेमचंद की कहानियों में मानवीय मूल्य केवल व्यक्तिगत नैतिकता नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का हिस्सा हैं।

डॉ. नामवर सिंह ने प्रेमचंद की अंतिम कहानियों, विशेषकर 'कफ़न' का विश्लेषण करते हुए इसे हिंदी कहानी के इतिहास में एक नया मोड़ माना है। उन्होंने तर्क दिया है कि जहाँ प्रेमचंद की शुरुआती कहानियों में 'हृदय परिवर्तन' और आदर्शवाद की प्रधानता थी, वहीं उत्तरार्ध की कहानियों (1930 के बाद) में वे यथार्थवाद' की ओर मुड़ गए थे, जहाँ भूख और गरीबी के आगे नैतिक मूल्य दम तोड़ देते हैं।

इसके अतिरिक्त, कमल किशोर गोयनका जैसे विद्वानों ने प्रेमचंद की कहानियों के मनोवैज्ञानिक और आर्थिक पक्षों पर विस्तार से चर्चा की है। उनकी समीक्षाओं से यह स्पष्ट होता

है कि प्रेमचंद के पात्र सामाजिक संरचना के दबाव में बदलते रहते हैं। 'पूस की रात' और 'ईदगाह' के मानवीय मूल्यों की तुलना जब 'कफ़न' के साथ की जाती है, तो आलोचकों का मानना है कि प्रेमचंद यहाँ भारतीय समाज के मोहभंग की स्थिति को चित्रित कर रहे थे।

'पूस की रात' (1930) - अभाव में मानवीय गरिमा:

'आर्थिक अभाव और व्यवस्था की क्रूरता के बीच पिसते किसान 'हल्कू' की कहानी है। भारी कर्ज के कारण वह कड़ाके की ठंड में खेत की रखवाली के लिए कंबल तक नहीं खरीद पाता। इस भीषण संघर्ष में उसका एकमात्र साथी उसका कुत्ता 'जबरा' है।

प्रेमचंद यहाँ दिखाते हैं कि घोर गरीबी के बावजूद हल्कू की मानवीय गरिमा जीवित है। वह जबरा को दुत्कारने के बजाय उसे गले लगाता है, जो मनुष्य और पशु के बीच के सह-अस्तित्व और प्रेम का उत्कृष्ट उदाहरण है। अंत में, फसल नष्ट होने पर हल्कू का यह कहना कि "अब रात की ठंड में यहाँ सोना तो न पड़ेगा," अभाव के कारण उत्पन्न एक भयानक उदासीनता को दर्शाता है, जो उसकी ईमानदारी पर भारी पड़ती है।

मुख्य मूल्य: बेजुबान पशु के प्रति गहरी संवेदना और विपरीत परिस्थितियों में भी हार न मानने वाली जीवटता।

'ईदगाह' (1933) - संवेदना और त्याग का चरमोत्कर्ष:

'बाल-मनोविज्ञान और मानवीय संवेदनाओं का अनूठा संगम है। चार-पाँच साल का बालक 'हामिद' निर्धनता के कारण अपनी इच्छाओं का दमन करना सीख जाता है। मेले के आकर्षण, खिलौनों और मिठाइयों के बीच वह अपने व्यक्तिगत सुख को त्यागकर अपनी दादी 'अमीना' के लिए 'चिमटा' खरीदता है, ताकि रोटी सेंकते समय उनके हाथ न जलें।

प्रेमचंद यहाँ दिखाते हैं कि विपदा किस प्रकार एक बालक को समय से पूर्व परिपक्व बना देती है। हामिद का यह कार्य त्याग, सहानुभूति और निस्वार्थ प्रेम के उच्चतम मूल्यों को स्थापित करता है। यह कहानी सिद्ध करती है कि मानवीय संवेदनाएँ किसी भौतिक वस्तु की तुलना में कहीं अधिक मूल्यवान होती हैं।

मुख्य मूल्य: विवेकपूर्ण निर्णय, बुजुर्गों के प्रति सम्मान और संवेदना का चरमोत्कर्ष।

'कफ़न' (1936) - मूल्यों का विघटन और कड़वा यथार्थ:

'प्रेमचंद के लेखन का सबसे कठोर यथार्थवादी चेहरा है। 'घीसू' और 'माधव' की संवेदनहीनता कोई व्यक्तिगत दोष नहीं, बल्कि उस शोषणकारी व्यवस्था का परिणाम है जहाँ दिन-भर काम करने के बाद भी किसान भूखा ही मरता है। जब व्यवस्था मनुष्य से उसकी बुनियादी ज़रूरतें छीन लेती है, तो वह मूल्यों के विघटन की ओर बढ़ता है।

बहू की मृत्यु पर कफ़न के पैसे से शराब और पूड़ियाँ खाना यह दिखाता है कि घोर निर्धनता में 'नैतिकता' और 'संवेदना' केवल बोझ बन जाते हैं। यहाँ केवल अस्तित्व की लड़ाई शेष रहती है। प्रेमचंद यह कड़वा सच उजागर करते हैं कि खाली पेट मानवीय मूल्यों की रक्षा असंभव है।

मुख्य मूल्य: नैतिक पतन का चित्रण और भूख के सामने सामाजिक संस्कारों की निरर्थकता। यह विश्लेषण प्रेमचंद की वैचारिक यात्रा के उस महत्वपूर्ण पड़ाव को दर्शाता है जहाँ वे 'आदर्शवाद' से 'यथार्थवाद' की ओर बढ़ते हैं। 1930 की 'पूस की रात' में किसान संघर्ष और गरिमा के बीच संतुलन बनाए रखता है, जबकि 1933 की 'ईदगाह' में अभाव के बावजूद संवेदनाएँ और पारिवारिक मूल्य अपने चरम पर होते हैं।

परंतु 1936 तक आते-आते 'कफ़न' में यह मानसिक स्थिति पूरी तरह बदल जाती है। यहाँ आर्थिक तंगी और लगातार होते शोषण ने मानवीय संवेदनाओं को कुचल दिया है। यह बदलाव सिद्ध करता है कि प्रेमचंद के पात्र सामाजिक परिस्थितियों की उपज हैं; जहाँ चरम निर्धनता इंसान को नैतिकता से विमुख कर केवल अपनी भूख मिटाने वाला एक 'जड़' प्राणी बना देती है।

6. निष्कर्ष :

प्रेमचंद के मानवीय मूल्य स्थिर न होकर गतिशील हैं, जो परिस्थितियों के अनुसार विकसित या खंडित होते रहते हैं। प्रस्तुत शोध आलेख के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मुंशी प्रेमचंद के साहित्य में मानवीय मूल्य स्थिर नहीं हैं, बल्कि वे निरंतर परिवर्तनशील सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के प्रति उत्तरदायी हैं। 1930 से 1936 के बीच का उनका रचना-संसार मानवीय संवेदनाओं के उत्थान और पतन की एक त्रासद यात्रा है।

जहाँ 'पूस की रात' और 'ईदगाह' में अभाव के बावजूद गरिमा, त्याग और संवेदना जैसे मूल्य सुरक्षित दिखाई देते हैं, वहीं 'कफ़न' तक आते-आते वे पूरी तरह बिखर जाते हैं। प्रेमचंद यह संदेश देते हैं कि नैतिकता केवल उपदेशों से नहीं, बल्कि एक न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था से जीवित रहती है। जब व्यवस्था मनुष्य को हाशिए पर धकेल देती है, तो उसके भीतर की मानवता भी दम तोड़ देती है।

अतः प्रेमचंद का साहित्य आज भी प्रासंगिक है क्योंकि यह हमें याद दिलाता है कि मानवीय मूल्यों को बचाने के लिए सामाजिक और आर्थिक न्याय अनिवार्य है। उनका यह क्रमिक बदलाव वास्तव में भारतीय समाज के उस दौर के मोहभंग का जीवंत दस्तावेज़ है।

आज के दौर में बढ़ती आर्थिक असमानता और बाजारीकरण के बीच प्रेमचंद का साहित्य अत्यंत प्रासंगिक है। उनके पात्र आज भी समाज के हाशिए पर खड़े व्यक्ति के संघर्ष को स्वर देते हैं। उनकी कहानियाँ हमें सचेत करती हैं कि संवेदनशून्य समाज में मानवीय मूल्यों को बचाए रखने के लिए सामाजिक न्याय अनिवार्य है।

संदर्भ सूची:

प्रेमचंद. (1930). पूस की रात. (मूल प्रकाशन: माधुरी).
प्रेमचंद. (1933). ईदगाह. (मूल प्रकाशन: चाँद).
प्रेमचंद. (1936). कफ़न. (मूल प्रकाशन: चाँद).
प्रेमचंद और उनका युग – डॉ. रामविलास शर्मा
प्रेमचंद: एक विवेचन – इंद्रनाथ मदान
कहानी: नई कहानी – डॉ. नामवर सिंह